

**Όλου του κόσμου τα παιδιά – Χάρης Σακελλαρίου**

(13η ενότητα, γ΄ τεύχος, σελ. 34 )

**Κίτρινο, μαύρο ή μελαμψό**

**έχω ένα χρώμα και τι μ΄ αυτό;**

**Μήπως και τ΄ άνθη τα ευωδιαστά,**

**χρώμα ένα έχουν και μια θωριά;**

**Μες στης μανούλας την αγκαλιά**

**το γάλα πήρα και τη μιλιά.**

**Μήπως στο λόγγο και τα πουλιά,**

**γλυκολαλούνε με μια λαλιά;**

**Σαν το λουλούδι, σαν το πουλί,**

**σαν κάθε πλάσμα σ΄αυτή τη γη.**

**Για λίγη αγάπη, λίγη χαρά,**

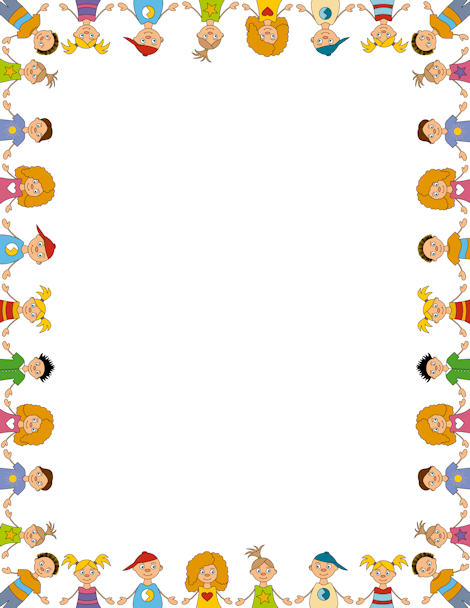
**διψά η καρδιά μου και λαχταρά.**

**Τα χέρια ανοίγω και την καρδιά**

**σ΄ όλα του κόσμου τ΄ άλλα παιδιά!**

**Ελάτε, αδέλφια, κι εμπρός μαζί,**

**να λάμψει ο κόσμος, σαν την αυγή!**



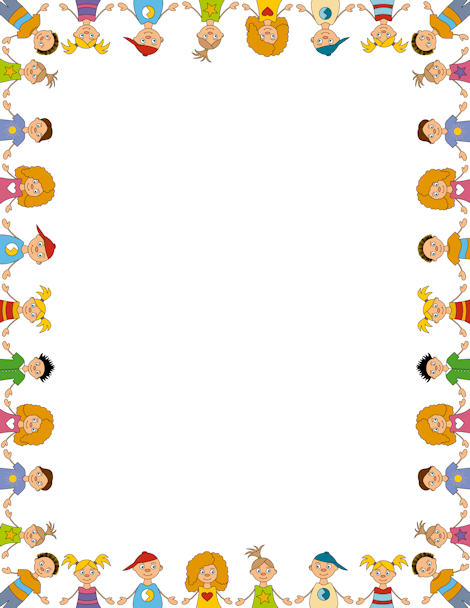
«Όλου του κόσμου τα παιδιά»

(Χάρης Σακελλαρίου, 13η ενότητα, γ΄ τεύχος, σελ. 34 )

ΕΡΓΑΣΙΑ:

**Το ποίημα είναι γεμάτο με εικόνες. Εντοπίστε μια και ζωγραφίστε την. Έπειτα γράψτε τους στίχους του ποιήματος που αναφέρονται σ΄ αυτήν.**

---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------





Γίνομαι ποιητής

Συμπληρώστε το ποίημα με μια δική σας στροφή.

---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

Γίνομαι ζωγράφος

Ζωγραφίστε τώρα μια εικόνα σχετική με την πιο πάνω στροφή που έχετε γράψει.